हरिकथामृथसार
कल्पसाधन संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पॆळुवे
परम भगवध्भक्त्थरिधनाधरधि कॆळुवुधु

ऐकविंशति मत प्रवतक
काकुमाग्गळ कुहकयुक्ति नि
राकरिसि सवॊत्तमनु हरियेंदु स्थापिसिद
श्रीकळत्रन सदन द्विजप पि
नाकि सन्नुतमहिम परम कृ
पाकटाअदि नॊडु मध्वाचाय गुरुवय २३–०१

वॆध मोदलागिप्पमल मॊ
आधिकारिगळाद जीवर
साधनगळ परॊअनंतर लिंगभंगवनु
साधुगळु चित्तयिपुदेन्नप
राधगळ नॊडदले चक्र ग
दाधरनु पॆळिसिद तेरदंददलि पॆळुवेनु २३–०२

थृण क्रिमि द्विज पशु नरॊत्तम
जनप नरगंधव गणरिव
रेनिपरम्शविहीन कमसुयॊगिगळु एंदु
तनु प्रतीकदि बिंबन उपा
सनव गैयुत इंद्रियज क
मनवरत हरिगपिसुत निममरु एनिसुवरु २३–०३

ऐलु विध जीवगण बहळ सु
राळि संख्यानॆमवुळळदु
ताळि नरदेहवनु ब्राह्मणकुलधलवतरिसि
स्थूलकमव तोरेदु गुरुगळु

पॆळिदथव तिळिदु तत्त
त्कालधम समपिसुवरु कमयॊगिगळु २३–०४

हीन कमगळिंद बहुविध
यॊनियलि संचरिसि प्रांतके
मानुषत्त्वनैदि सवॊत्तमनु हरियेंदु
ज्ञ्न्यानभक्तिगळिंद वेदॊ
क्तानुसार सहस्र जनुम
न्यून कमव माडि हरिगपिसिद नंतरदि २३–०५

हत्तु जनुमगळल्लि हरि स
वॊत्तम्म सुरासुरगणाचित
चित्रकम विशॊकनंतानंतरूपात्म
सत्यसंकल्प जगदु
त्पत्ति स्थिति लय कारण जरा
मृथ्युवजितनेंदुपासनेगैद तरुवाय २३–०६

मूरु जनुमगळल्लि दॆहा
गार पशु धनपत्निमित्रकु
मार मातापितृगळल्लिह स्नॆहदिंदधिक
मारमणनलि बिडदे माडुव
सूरिगळु ई उक्तजनुमव
मीरि परमात्मन स्वदॆहदि नॊडि
सुखिसुवरु २३–०७

दॆवगायकजान चिरपितृ
दॆवरेल्लरु ज्ञ्न्यानयॊगिग
ळावकालकु पुष्कर शनैश्चर उषा स्वाहा
दॆवि बुध सनकादिगळु मे
घावळी पपजन्य सांशरु
ई उभयगणदोळगिवरु विज्~नान यॊगिगळु २३–०८

भरथखम्दधि नूरु जन्मव ढरिसि निष्कामक
सुकमा चरिसिधानम्थरधि धशसाहस्र जन्मधलि
उरुथरज्झन्यानवनु पदेधै धारुधशधेहधलि
भक्थिय निरवढिकनलि मादि काम्बरु बिम्बरूपवनु २३–९

साढनाथ्पवधलि इवरिगनाधिकालपरोक्षविल्ल
निषेढकमगळिल्ल नरकप्राप्थि मोधलिल्ल
वेधशास्थ्रगळल्लि इप्प विरोढवाक्यव परिहरिसि मढु
सूधनने सवोथ्थमोथ्थमनेम्धु सुखिसुवरु २३–१०

सत्यलोकाधिपन विडिदु श
तस्थ देवगणांतरेल्लरु
भक्तियोगिगळेंदु करेसुवराव कालदलि
भक्तियोग्यर मध्यदलि स
द्भक्तिविज्झन्यानदि गुणदिं
दुत्तमोत्तम ब्रह्म वायु वाणि वाग्देवि २३–११

ऋजुगणके भक्थ्याधिगुण साहजवेनिसुवुवु क्रमधि
वृध्द्याब्जज पधविपयम्थ बिम्बोपासनवु अढिक
वृजिनवजिथरिवरोळगे थ्रिगुणज विकारगळिल्लुवेम्धिगु
ध्विजफणिपमृदशक्रमोधलाधवरोळिरुथिहवु २३–१२

साधनात्पूवदलि ई ऋ
ज्वादि तात्त्विकरेनिप सुरगण
नादि सामान्यापरोइगळेंदु करेसुवरु
साधनोत्तर स्वस्थ बिंब उ
पाधिरहितादित्यनंददि
सादरदि नोडुवरु अधिकारानुसारदलि २३–१३

चिन्नभक्तरु एनिसुतिहरु सु

पण शेषाद्यमररेल्ला
च्छिन्नभकुतरु नाल्वरेनिपरु भारती प्राण
सोन्नॊडल वाग्देवियरु फणे
गण्ण मॊदलादवरोळगे त
त्तन्नियामकरागि व्यापारवने माडुवरु २३–१४

हीन सत्कमगळेरडु पव
मानदॆवनु माळपनिदकनु
मानविल्लॆंदेनुत दृढभक्तियलि भजिपगे
प्राणपति संप्रीतनागि कु
यॊनिगळ कोडनेल्ल कमग
ळाने माडुवेनेंब मनुजर नरककैदिसुव २३–१५

दॆव ऋषि पितृ नृप नररे नि
पैवरोळु नेलिसिद्दु अवर स्व
भाव कमव माडि माडिप ओंदु रूपदलि
भाविब्रह्मनु कूमरूपद
ली विरिंचांडवनु बेन्नलि
ता वहिसि लॊकगळ पोरेवनु द्वितीय रूपदलि २३–१६

गुप्तनागिद्दनिलदॆव द्वि
सप्तलॊकद जीवरोळगे त्रि
सप्तसाविरदारुनूरु श्वासजपगळनु
सुप्तस्वप्नादि जाग्रतेगळ
लाप्तनंददि माडिमाडिसि
क्लुप्तभॊगगळीव प्रांतके तृतियरूपदलि २३–१७

शुद्ध सत्वात्मक शरीरदोळू
इद्द कालकु लिंगदॆहवु
बद्धवागदु दग्धपटदॊपादि
इरुतिहुदु सिद्धसाधन सवरोळगन

www.sousigma.com

वद्यनेनिसुव गरुड शॆष क
पदिमोदलादमररेल्लरु दासरेनिसुवरु २३–१८

गणदॊळगे तानिद्दु ऋजुवें
देनिसिकोंबनु कल्पशत सा
धनवगैदानंतरदि ता कल्कियेनिसुवनु
द्विनवशीतिय प्रांत भागदि
अनिल हनुमद्भीम रूपदि
दनुजरेल्लर सदेदु मध्वाचायरेनिसिदनु २३–१९

विश्वव्यापक हरिगे ता सा
दृश्यरुपव धरिसि ब्रह्म स
रस्वति भारतिगलिंदोडगूडि पवमान
शाश्वत सुभक्तियलि सुज्ज्ञन्यान
स्वरूपन रूप गुणगळ
नश्वरवु एंदेनुत पोगळुव श्रुतिगळोळगिद्दु २३–२०

खॆट कुक्कुट जलटवेंब त्रि
कॊटिरूपव धरिसि सतत नि
शाटरन संहरिसि सलहुव सकल सज्जनर
कैटभारिय पुरद प्रथमक
वाटवेनिसुव गरुद शॆष ल
लाटलॊचन मुख्यसुररिगे आव कालदलि २३–२१

ई ऋजुगळोळगोब्ब साधन
नूरु कल्पदि माडि करेसुव
चारुतर मंगळसुनामदि कल्पकल्पदलि
सूरिगळु संतुतिसि वंदिसे
घॊरदुरितगळळिदु पॊपुवु
मारमण संप्रीतनागुव सवकालदलि २३–२२

पाहि कल्कि सुतेजदासने
पाहि धमाधमखंडने
पाहि वचस्वी खषण नमो साधु महिपतिये
पाहि सद्धमज्झन्य धमज
पाहि संपूण शुचि वैकृत
पाहि अंजन सषपने खपट श्रधाह्व २३–२३

पाहि संध्यात विज्झन्यानने
पाहि महविज्झन्यान कीतन
पाहि सम्कीणाख्य कस्त्थने महा बुद्ध जया
पाहि सुमहत्तर सुईयने
पाहि मां मेधावि विजय जय २३–२४

पाहि मोद प्रमोद संतस
पाहि आनंद संतुष्टने
पाहि माम् चावांग चारु सुबाहु चारुपद
पाहि पाहि सुलोचनने मां
पाहि सारस्वत सुमीरने
पाहि प्राज्झन्यने कपीयलंपट पाहि सवज्~न २३–२५

पाहि मां सवजेत् मित्रने
पाहि पापविनाशकने मां
पाहि धमविनेत शारद ओज सुतपस्वी
पाहि मां तेजस्वि नमो मां
पाहि दानशीलने सुशीलने
पाहि यज्झन्यसुकत यज्वे यागवतकने २३–२६

पाहि प्राण त्राण अमषि
पाहि मां उपदेष्ट मारक
पाहि कालक्रीडन सुकता सुकालज्झन्य

www.yousigma.com

पाहि कालसुसूचकने मां
पाहि कलिहत कलि मां
पाहि काल श्य्यमॆरेत सदारत सुबलने २३–२७

पाहि पाहि सहॊ सदाकपि
पाहि गम्यज्ज्ञन्यानदशकुल
पाहि मां श्रोतव्य नमॊ संकीतव्य नमो
पाहि मां मंतव्य कव्यने
पाहि मां ध्रष्टव्य सख्यने
पाहि मां गंतव्य क्रव्यने पाहि स्मतव्य २३–२८

पाहि सॆव्य सुभव्य नमो मां
पाहि स्वगव्य नमॊ भाव्यने
पाहि मां ज्ज्ञन्यातव्य नमॊ वक्तव्य गव्य नमॊ
पाहि मां लात्व्य वायुवे
पाहि ब्रह्म ब्राह्मणप्रिय
पाहि पाहि सरस्वतीपतॆ जगद्गुरुवय २३–२९

वामनपुराणदलि पॆळिद
ई महात्मर परममंगळ
नामगळ संप्रीतिपूवक नित्य स्मरिसुवरु
श्रीमनॊरमनवरु बॆडिद
कामिताथगळित्तु तन्न त्रि
धामदोळगनुदिनदलिट्टानंदपडिसुवनु २३–३०

ई समीरगे नूरु जनुम म
हासुख प्रारब्धभोग प्र
यासविल्लदलैदिदनु लॊकाधिपद्यवनु
भूसुरन ओप्पिडियवलिगे वि
शॆष सौख्यवनित्त दातन
दासवयनु लॊकपतियेनिसुवुदु अच्चरिवे २३–३१

द्विशतकल्पगळल्लि बिडदी
पॆसरिनिंदलि करेसिदनु त
न्नोशदमररोळगिट्टु माडुवनवर साधनव
असदुपासनेगैव कल्या
द्यसुर पर संहरिसि ता पों
बसिरपदवैदुवनु गुरुपवमान सतियोडने २३–३२

अनिमिषर नामदलि करेसुव
अनिलदॆवनु ओंदु कल्पदि
वनजसंभवनेनिसि एंभत्तेळुवरे वरुष
गुणत्रयविवजितन मंगळ
गुणक्रिय सुरूपगळुपा
सनवु अव्यक्तादि पृथ्व्यंतरदि इरुतिहुदु २३–३३

महित ऋजुगुणकोंदॆ परमॊ
त्सह विवजितवेंब दॊषवु
विहितवॆ सरि इदनु पॆळदे मुक्तब्रह्मरिगे
बहुदु साम्य ज्ञ्न्यान भकुतियु
द्रुहिणपद परियंत वृद्धियु
बहिरुपासनेयुंटनंतर बिंब दर्‍हनवु २३–३४

ज्ञ्न्यानरहित भयत्व पॆळव पु
राण दैत्यर मॊहकवु चतु
राननगे कोडुवुदे मॊहाज्ञ्न्यान भय शॊक
भानुमंडल चलिसुदंददि
काणुवुदु दृग्दॊष दिंदलि
श्रीनिवासन प्रीतिगॊसुग तॊदनल्लुदले २३–३५

कमलसंभव सवरोळगु
त्तमनेनिसुवनु एल्ल कालदि

विमल भकुति ज्ञ्न्यान वैराग्यादि गुणगदिंद
समभ्यधिकविवजितन गुण
रमेय मुखदिंदरितु नित्यदि
द्युमणि कॊटिगळंते कांबनु बिंबरूपवनु २३–३६

ज्ञ्न्यानभक्त्याद्यखिळगुण चतु
राननोळगिप्पंते मुख्य
प्राणनलि चिंतिपुदु यत्किंचितु कोरतेयागि
न्यून ऋजुगण जीवरलि क्र
मॆण वृद्धि ज्ञ्न्यान भकुति स
मान भारति वाणिगळलि पदप्रयुक्तधिक २३–३७

सौरि सूयन तेरदि ब्रह्म स
मीर गायत्रि गिरिगळोळु
तॊरुवुदु अस्पष्टरूपदि मुक्तिपरियंत
वारिजासन वायुवाणि
भारतिगळिगे महाप्रळयदि
बारदज्ञ्न्यानादिदॊषवु हरिकृपाबलदि २३–३८

नूरु वरुषा नंतरदलि स
रॊरुहासनु तन्न कल्पद
लारु मुक्तियनैदुवरो अवरवर करेदोय्दु
शौरिपुरदोळगिप्प नदियलि
कारुणिक सुस्नान निजपरि
वार सहितदि माडि हरियुदर प्रवॆशिसुव २३–३९

वासुदॆवन उदरदलि प्र
वॆशगैदानंतरदि नि
दॊष मुक्तरु उदरदिं पोरमोट्टु हरुष्दलि
ईशनींदाज्ञ्न्यव पडेदनं
तासन श्वॆतद्वीप मॊअदिं

www.yousigma.com

वासवागि विमुक्तदु:खरु संचरिसुतिहरु २३–४०

सत्वसत्व महासुसूमवु
सत्वसत्वात्मक कळेवर
सत्य लोकाधिपनेनिपगत्यल्पवेरडु गुण
मुक्ति योग्यविदल्लजांडो
त्पत्ति कारणवल्ल हरिप्री
त्यथवागि जगद्व्यापारगळ माडुवनु २३–४१

पादन्यून शताब्ध परियं
तोदि उग्रतपाह्वयदि लव
णोदधियोळगे कल्पदश तपविद्दनंतरदि
साधिसिद महदेव पदवा
रैदुनव कल्पावसानके
ऐदुवनु ता शेषपदव पावतीसहितनागि २३–४२

इंद्रमनु दशकल्पगळलि सु
नंदनामदि श्रवणगैदु मु
कुंदनपरोआथ नाल्कु सुकल्प तपविद्दु
नोंदु पोगेयोळु कोटि वरुष पु
रंदरनु अदनुंडनंतर
पोंदिदनु निजलोक सुरपति कामनिदरंते २३–४३

करेसुवरु पूवदलि चंद्रा
क रतिशांत सुरूपनामदि
एरडेरडु मनुकल्प श्रवणव गैदु मनुकल्प
वरतपोबलदिंदलवाक्
शिरगळागी रैदुसाविर
वरुष दु:खव नीगि कांबरु बिंबरूपवनु २३–४४

साधनगळपरोआनंतर

www.yousigma.com

ऐदुवरु मॊअवनु शिव श
क्रादि दिविजरु उक्तक्रमदिं कल्पसंख्येयलि
ऐदलेयगैवत्तु उपेंद्र स
हॊदरनिगिप्पत्तु द्वीनव त्व
गाधिपति प्राणनिगे गुरुमनुगळिगे षॊडशवु २३–४५

प्रवहमरुतगे हन्नेरडु सैं
धव दिवाकर धमरिगे दश
नवसुकल्पवु मित्ररिगे शेषशतजनरिगेंटु
कवि सनक सुसनंदन सन
त्कुवर मुनिगळिगॊळु वरुणन
युवति पजन्यादि पुष्करगारु कल्पदलि २३–४६

ऐदु कमज सुररिगाजा
नादिगळिगीरेरडु कल्पा
धाधिकत्रय गॊपिकास्त्रीयरिगे पितृ त्रयवु
ई दिवौकस मनुज गायक
रैदुवरु एरडोंदु कल्प न
राधिपरिगरेकल्पदोळगपरॊअविरुतिहुदु २३–४७

दिपगळननुसरिसि दीप्तियु
व्यापिसि महातिमिर कळेदु प
रॊपकारव माळप तेरदंददलि परमात्मा
आ पयॊजासनरोळिद्दु स्व
रूप शक्तिय व्यक्तगैसुत
ता पोळेवनवरंते चेष्टेय माडि माडिसुत २३–४८

स्वॊदरस्थित प्राण ऋद्रें
द्रादि सुररिगे देहगळ को
ट्टादरदलवरवर सेवॆय कोंबननवरत
मॊद बॊध दयाब्धि तन्नव

राधिरॊगव कळेदु महदप
राधगळ नॊडदेले सलुहुव सतत स्मरिसुवर २३–४९

प्रति प्रती कल्पदलि सृष्टि
स्थिति लयव माडुतले मॊदिप
चतुरमुख पवमानरन्नव माडि भुंजिसुव
घृतवे मृत्युंजयनेनिप दॆ
वतेगळे उपसॆचनरु श्री
पतिगे मूजगवेल्लवॊदनतिथियेनिसिकोंब २३–५०

गभणी स्त्री उंड भॊजन
गभगत शिशु उंब तेरदलि
निभयनु तानुंडुणिसुवनु सवजीवरिगे
निबलतिपरमाणु जीवगे
अब्बुवदे स्थूलान्नभॊजन
अभकरु पॆळुवरु कॊविदरिदनोंडंबडरु २३–५१

अपचयगळिल्लुंडुददरिं
दुपचयगळिल्लुमरगणदोळ
गुपमरेनिसुवरिल्ल जनुमादिगळु मोदलिल्ल
अपरिमितसन्महिम नरहरि
अपुनरावतरन माडुव
कृपणवत्सल स्वपदसौख्यवनित्तु शरणरिगे २३–५२

बित्ति बीजव भूमियोळु नी
रेत्ति बेळेसिद बेळसु प्रांतके
कित्ति मेलुवंददलि लकुमीरमण लॊकगळ
मत्ते जीवर कम कालॊ
त्पत्ति स्थिति लय माडुतलि सम
वतियेनिसुव खॆद मॊदगळिल्लुदनवरत २३–५३

श्वसनरुद्रेंद्र प्रमुख सुम
नसरोळिद्दरु उत्पिपासेग
ळोशदोळिप्पुवु सकल भोगके साधनगळागि
असुर प्रेत पिशाचिगळ बा
धिसुतलिप्पुवु दिनदि मा
निसरोळगे मृगपइ जीवरोळिद्दु पोगुवुवु २३–५४

वासुदेवगे स्वप्न सुषुप्ति पि
पासे उधे भय शोक मोहा
यास विस्मृति मात्सय मद पुण्य पापादि
दोषवजितनेंदु ब्रह्म स
दाशिवादि समस्त दिविजरु
पासनेय गैदेल्ल कालदि मुक्तरागिहरु २३–५५

परमसूम अणवैदु तृटि
करेसुवदु ऐवत्तु त्रुटि लव
एरडु लववु निमेष निमेषगळेंटु मात्र युग
गुरु दश प्राणावु पळवु ह
न्नेरडु बाणवु घळिगे त्रिंशति
इरुळु हगलरवत्तु घटिगळहोरात्रिगळु २३–५६

ऐ धिवा राथिगळेरेदु हधिनैधु पक्षगळेरदु मासग
ळाधपुवु मासध्वयवे ऋथु ऋथुथ्रयगळयन
ऐधुवुधु अयनध्वयाब्ध कृथाधियुगगळु
धेवमानधि ध्वाधशसहस्रवरुषगळहवधनु पेळुवेनु २३–५७

चथुस्साविरधेम्तुनूरिवु कृथयुगके थ्रिसहस्र
सले षत् शथवु थ्रेथेगे ध्वारगे ध्विसहस्रनानूरु
धिथिजपथि कलियुगके साविर शथगळध्वय कूदि
ई धेवथेगळिगे हन्नेरदु साविरवहवु वरुषगळु २३–५८

प्रथम युगकॆळधिकवरे विं
शति सुलआष्टॊतरशत विं
शतिसहस्र मनुष्य मानब्दगळु षण्णवति
मित सहस्रद लअद्वादश
द्वितिय तृतियके एंटुलअद
चतु:षष्टि सहस्र कलिगिदरध चिंतिपुदु २३–५९

मूरधिकनाल्वत्तुलअद
लारु मूरेरडधिक साविर
ईरिरडु युग वरुष संख्येय गैयलेनितहुदु
सूरिपेद्दिसे साविरद ना
न्नूरु मूवत्तेरडुकॊटि स
रॊरुहासनगिदु दिवसवेंबरु विपश्चितरु २३–६०

शतधृतिगे ई दिवसगळु त्रिं
शतियु मासद्वादशाब्दवु
शतवेरडरोळु सवजीवॊत्पत्तिस्थितिलयवु
श्रुतिस्मृतिगळु पॆळुतिहव
च्युतगे निमिषविदेंदु सुखशा
श्वतगे पासटियेंबरे ब्रह्मादि दिविजरनु २३–६१

आधिमढ्यम्थगळु इल्लध माढवगिधुपचार
वेम्धु ऋगाधिवॆधपुराणगळु पॆळुवुवु निथ्यधलि
मॊधमयनानुग्रहव सम्पाधिसि रमाब्र:मरुध्रेम्
ध्राधिगळु थम्थम्म पधवियनैधि सुखिसुवरु २३–६२

ई कथामृतपानसुख सुवि
वॆकिगळिगल्लुदले वैषिक
व्याकुल कुचित्तरिगे दोरेवुदे आव कालदलि
लॊकवातेय बिट्टु इदनव
लॊकिसुत मॊदिपरिगोलिदु कृ

www.yousigma.com

पाकर जगन्नाथविठल काव्व करुणदलि २३–६३

www.yousigma.com